मनीष कुमार नेमा

सरस्वती : एक नदी जो लुप्त हो गयी

सरस्वती आज की गंगा की तरह उस समय की विशालतम नदियों में से एक थी। इस बात का भी उल्लेख है कि भगवान श्री कृष्ण के अग्रज श्री बलरामजी ने द्वारका से मथुरा तक की यात्रा सरस्वती नदी से की थी और महाभारत की लड़ाई के बाद यादवों के पार्थिव अवशेषों को इसमें बहाया गया था। यानी तब इस नदी से इतना अथाह जल प्रवाहित होता था कि इसके माध्यम से जलयात्राएं भी की जा सकती थी। यह हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं को तोड़ती हुई निकलती थी और सपाट मैदानों से होती हुई अरब सागर में समाहित हो जाती थी। इसका वर्णन ऋग्वेद में बार–बार आता है। ऋग्वेद वैदिक काल में इसमें हमेशा जल रहता था। उत्तर वैदिक काल और महाभारत काल में यह नदी बहुत कुछ सूख चुकी थी। तब सरस्वती नदी में पानी बहुत कम था। लेकिन बरसात के मौसम में इसमें पानी आ जाता था।

अनेक पौराणिक हिन्दू ग्रन्थों तथा वेदों में वर्णित मुख्य भारतीय नदियों में से सरस्वती नदी का उल्लेख अनेक बार आता है। ऋग्वेद के नदी-सूक्त खंड में सरस्वती नदी की स्पष्ट भौगोलिक स्थिति का विस्तार से वर्णन किया गया है। ऋग्वेद के अनुसार यमुना नदी के पश्चिम और सतलुज नदी के पूर्व में विशाल सरस्वती नदी को बहती हुई बताया गया है। ऋग्वेद में सात नदियों वाले सप्तसैंधव देश का वर्णन है जिसमें पूर्व में सरस्वती; मध्य में शुतुद्री (सतलुज), बिपाशा (व्यास), परूष्णि या ऐरावती (रावी), चंद्रभागा असीक्नी (चिनाव), और वितस्तता (झेलम); पश्चिम में सिंधु एवं कुभा (काबुल नदी) बहती थी। इन नदियों में सरस्वती सबसे बड़ी नदी थी इसीलिए इसे नदीमते अर्थात नदियों में श्रेष्ठ भी कहा जाता था। वैदिक ग्रंथों के पश्चात के ग्रंथों, जैसे ताण्ड्य और जैमिनीय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरुस्थल में सूखा हुआ बताया गया है, महाभारत में भी सरस्वती नदी के थार मरुस्थल में 'विनाशन' अथवा 'उपमज्जना' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है। महाभारत में सरस्वती नदी के अन्य पर्याय नाम 'प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि वर्णित हैं।

महाभारत, वायुपुराण आदि में सरस्वती के विभिन्न पुत्रों के नाम और उनसे जुड़े मिथक प्राप्त होते हैं। महाभारत के शल्य-पर्व, शांति-पर्व, या वायुपुराण में सरस्वती नदी और दधीचि ऋषि के पुत्र सम्बन्धी मिथक थोड़े-थोड़े अंतरों से मिलते हैं, उन्हें संस्कृत महाकवि बाणभट्ट ने अपने ग्रन्थ 'हर्षचरित' में विस्तार दे दिया है। उन्होंने लिखा है कि एक बार बारह वर्ष तक वर्षा न होने के कारण ऋषिगण सरस्वती का क्षेत्र त्याग कर इधर-उधर हो गए, परन्तु माता के आदेश पर सरस्वती-पुत्र, सारस्वतेय वहाँ से कहीं नहीं गया। फिर सुकाल होने पर जब तक वे ऋषि वापस लौटे तो वे सब वेद आदि भूल चुके थे। उनके आग्रह का मान रखते हुए सारस्वतेय ने उन्हें शिष्य के रूप में स्वीकार किया और पुनः श्रुतियों का पाठ करवाया। अश्वघोष ने अपने 'बुद्धचरित' काव्य में भी इसी कथा का वर्णन किया है।

वैदिक ग्रंथों में दिये गए सरस्वती नदी के सन्दर्भों

के अलावा कई भू-विज्ञानी, भूजल-विज्ञानी आदि मानते हैं कि हिमालय से उद्गमित होकर, वर्तमान समय के हरियाणा से राजस्थान होकर बहने वाली मौजूदा सूखी हुई घग्घर-हकरा नदी प्राचीन वैदिक सरस्वती नदी की एक मुख्य सहायक नदी थी, जो 5000-3000 ईसा पूर्व पूरे प्रवाह से विपुल जलराशि के साथ बहती थी। उस समय सतलुज तथा यमुना नदी की कुछ धाराएं सरस्वती नदी में आ कर मिलती थी। इसके अतिरिक्त दो अन्य नदियाँ दृष्टावदी (चौतंग) और हिरण्यवती भी सरस्वती की सहायक नदियाँ थी। लगभग 1900 ईसा पूर्व तक भूगर्भी परिवर्तनों से यमुना एवं सतलुज नदियों ने अपना रास्ता बदल दिया तथा 2600 ईसा पूर्व हिरण्यवती नदी के सूख जाने के कारण सरस्वती नदी भी लुप्त हो गयी। वैदिक सभ्यता में सरस्वती ही सबसे बड़ी और मुख्य नदी थी। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा किये गये शोध से पता चला है कि आज भी यह नदी हरियाणा, पंजाब और राजस्थान से होती हुई भूमिगत रूप में प्रवाहमान है।

सरस्वती आज की गंगा की तरह उस समय की विशालतम नदियों में से एक थी। इस बात का भी उल्लेख है कि भगवान श्रीकृण के अग्रज श्री बलरामजी ने द्वारका से मथुरा तक की यात्रा सरस्वती नदी से की थी और महाभारत की लड़ाई के बाद यादवों के पार्थिव अवशेषों को इसमें बहाया गया था। यानी तब इस नदी से इतना अथाह जल प्रवाहित होता था कि इसके माध्यम से जलयात्राएं भी की जा सकती थी। यह हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं को तोड़ती हुई निकलती थी और सपाट मैदानों से होती हुई अरब सागर में समाहित हो जाती थी। इसका वर्णन ऋग्वेद में बार-बार आता है। ऋग्वेद वैदिक काल में इसमें हमेशा जल रहता था। उत्तर वैदिक काल और महाभारत काल में यह नदी बहुत कुछ सूख चुकी थी। तब सरस्वती नदी में पानी बहुत कम था। लेकिन बरसात के मौसम में इसमें पानी आ जाता था। भूगर्भी परिवर्तनों के कारण सरस्वती नदी का कुछ पानी गंगा में चला गया और कुछ पानी सिंधु में चला गया। विशाल भूकंपन के कारण जब भूमि ऊपर उठी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया। इसलिए यमुना में सरस्वती का जल भी प्रवाहित होने लगा। सिर्फ इसीलिए प्रयाग में तीन नदियों का संगम माना गया, जबकि भौतिक रूप में वहां तीन नदियों का संगम नहीं है। वहाँ केवल दो नदियां हैं। सरस्वती कभी भी इलाहाबाद तक नहीं पहुँची।

2. सरस्वती नदी का उद्गम स्थल

सरस्वती नदी का उद्गम सिंधु एवं गंगा के प्रवाह क्षेत्रों के मध्य, हरियाणा में यमुनानगर शहर से थोड़ा ऊपर और शिवालिक पहाड़ियों से थोड़ा सा नीचे आदिबद्री नामक स्थान को माना जाता है। आज भी लोग इस स्थान को तीर्थस्थल के रूप में मानते हैं और श्रद्धा भाव से वहां जाते हैं। कुछ आगे चलने पर पेहोवा के पास मारकंडा नदी आकर इसमें मिलती है। कुछ और आगे चलकर रसूला के पास में सरस्वती घग्गर नदी में खो जाती है। चौड़े पाट वाली घग्गर नदी में आज केवल बाढ़ का पानी बहता है और वह भी केवल वर्षाकाल के कुछ ही दिनों में। किन्तु, वर्तमान में आदिबद्री नामक स्थान से बहने वाली नदी बहुत दूर तक नहीं जाती। एक पतली धारा की तरह जगह-जगह दिखाई देने वाली इस नदी को ही लोग सरस्वती कह देते हैं। पौराणिक वर्णन के अनुसार इसी नदी के किनारे ब्रह्मावर्त और कुरुक्षेत्र था। लेकिन आज वहां नदियों के स्थान पर जलाशय हैं। जब नदी सूखती है तो जहां-जहां पानी गहरा होता है, वहां-वहां तालाबों या झीलों का निर्माण हो जाता है। आज भी कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर या पेहोवा में सरोवर देखने को मिलते हैं, लेकिन ये भी सूख गए हैं। लेकिन ये सरोवर इस तथ्य का प्रमाण हैं कि उस स्थान पर कभी कोई विशाल नदी बहती रही होगी और उसके सूखने के बाद वहां विशाल झीलें बन गयी। घग्गर नदी की 6 से 8 किलोमीटर चौड़ी जल-वाहिकायें इस बात की सूचक हैं कि कभी उसमें विपुल जलराशि प्रवाहित होती थी। शिवालिक में उपजी क्षुद्र नदियों और सरिताओं का जल योगदान इतना अधिक नहीं होता है। अतः यह तर्कसंगत लगता है कि शिवालिक के पार हिमालय में कहीं उस बड़ी नदी का उद्गम रहा होगा।

वैदिक सरस्वती का प्रवाह क्षेत्र।

भारतीय पुरातत्व परिषद् के अनुसार सरस्वती का उद्गम उत्तराखंड में रूपेण नाम के हिमनद (ग्लेशियर) से होता था। रूपेण ग्लेशियर को अब सरस्वती ग्लेशियर भी कहा जाने लगा है। नैतवार में आकर यह हिमनद जल में परिवर्तित हो जाता था, फिर जलधार के रूप में आदिबद्री तक सरस्वती बहकर आती थी और आगे चली जाती थी। हर-की-दून ग्लेशियर से उत्पन्न होने वाली तमसा (वर्तमान की टोंस नदी) वह नदी है जो बाटा और मारकंडा के मार्ग से बहती हुई कालागाम के पास मैदान में उतरती थी और रसूला के पास घग्गर में मिलती थी। अगर दूसरे शब्दों

भारतीय पुरातत्व परिषद् के अनुसार सरस्वती का उद्गम उत्तराखंड में रूपेण नाम के हिमनद (ग्लेशियर) से होता था। रूपेण ग्लेशियर को अब सरस्वती ग्लेशियर भी कहा जाने लगा है। नैतवार में आकर यह हिमनद जल में परिवर्तित हो जाता था, फिर जलधार के रूप में आदिबद्री तक सरस्वती बहकर आती थी और आगे चली जाती थी। हर–की–दून ग्लेशियर से उत्पन्न होने वाली तमसा (वर्तमान की टोंस नदी) वह नदी है जो बाटा और मारकंडा के मार्ग से बहती हुई कालागाम के पास मैदान में उतरती थी और रसूला के पास घग्गर में मिलती थी। अगर दूसरे शब्दों में कहे तो घग्गर नदी ही, हिमालय मूल की टोंस नदी का मध्यमार्ग है। और आज की टोंस नदी ही अतीत की सरस्वती की पूर्व शाखा तमसा है।

में कहें तो घग्गर नदी ही, हिमालय मूल की टोंस नदी का मध्यमार्ग है और आज की टोंस नदी ही अतीत की सरस्वती की पूर्व शाखा तमसा है।

3. सरस्वती नदी के विलुप्त होने के कारण

वैज्ञानिक और भूगर्भीय अध्यनों से पता चला है कि किसी समय वर्तमान के हरियाणा एवं राजस्थान क्षेत्रों में भीषण भूकम्प आए, जिसके कारण जमीन के नीचे के पहाड़ ऊपर उठ गए और सरस्वती नदी का जल पीछे की ओर चला गया। वैदिक काल में एक और नदी दृषद्वती (वर्तमान का चौतंग नाला) का वर्णन भी आता है। यह सरस्वती नदी की सहायक नदी थी। यह भी हरियाणा से होकर बहती थी। इसका इतिहास 4,000 वर्ष पूर्व माना जाता है। यमुना पहले चम्बल की सहायक नदी थी। बहुत बाद में यह इलाहाबाद में गंगा से जाकर मिली। यही वह काल था जब सरस्वती का जल भी यमुना में मिल गया। पूर्वकाल में सरस्वती समुद्र में गिरती थी। जैसा ऊपर भी कहा जा चुका है, प्रयाग में सरस्वती कभी नहीं पहुंची। भूचाल आने के कारण जब जमीन ऊपर उठी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया। और इस प्रकार यमुना के साथ सरस्वती के जल का गंगा में संगम त्रिवेणी संगम कहा जाने लगा।

4. सरस्वती नदी और हड़प्पा सभ्यता :

अधिकतर इतिहासकार भारतीय इतिहास में मानव-सभ्यता का प्रारम्भ सिंधु नदी की घाटी की मोहनजोदड़ो और हड़प्पाकालीन सभ्यता से मानते थे, लेकिन अब जबसे सरस्वती नदी की खोज हुई है, भारत का इतिहास बदलने लगा है। अब माना जाता है कि सरस्वती नदी के मुहाने पर विकसित हुई सभ्यतायें सिंधु घाटी की सभ्यता से भी कई हजार वर्ष पुरानी हैं। इसी अंचल पर हड़प्पा सभ्यता विकसित हुई और 4600 ईसा पूर्व से लेकर 3900 ईसा पूर्व की अवधि में उन्नति के शिखर पर पहुंची।

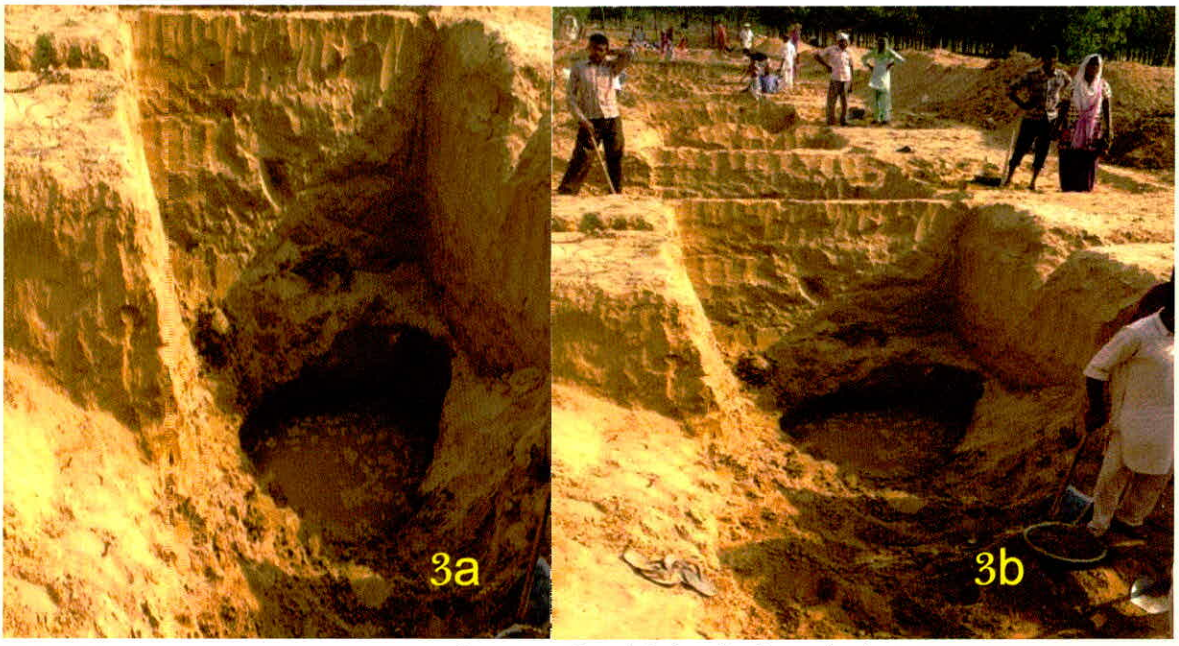

3 a व 3 b- मुगलवाली, यमुनानगर में खुदाई के दौरान निकली सरस्वती नदी।

वस्तुतः हड़प्पा सभ्यता और वैदिक संस्कृति को अलग नहीं किया जा सकता है। उनमें ना केवल अत्यधिक समानता है, वरन दोनों की कालावधि भी एक ही है। किंतु सभी विद्वान इस मत से सहमत नहीं है। विडंबना है कि वैदिक काल के लोगों का साहित्य तो है किंतु इतिहास एवं पुरातात्विक साक्ष्य नहीं है और हड़प्पा संस्कृति का पुरातात्विक इतिहास है, परंतु साहित्य उपलब्ध नहीं हैं। पुरातात्विक अध्ययनों से पता चलता है कि सरस्वती नदी के विलुप्त होने के कारण हड़प्पा सभ्यता समाप्त हो गयी होगी। ढोलवीरा (गुजरात) कच्छ के रण में स्थित कस्बा है। निश्चित रूप से, अगर वहां कोई पानी का स्रोत नहीं था तो कोई सभ्यता एक शहर का निर्माण नहीं कर सकती थी और ना तो वहां लोग रह सकते थे। सरस्वती नदी की समाप्ति के बाद उसके किनारे बसे हुये शहरों में रहने वाले लोग पूर्व में गंगा मैदानी इलाकों में चले गए होंगे। इस संभावना के संबंध में अभी तक प्रकाशित पुस्तकों में कोई भी जानकारी नहीं दी गई है। हालिया पुरातत्व विभाग की खुदाई से इस सिद्धांत को समर्थन मिलता है।

5. सरस्वती नदी पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण

एक फ्रांसीसी प्रागैतिहासिकार माइकल डैनिनों ने सरस्वती नदी की उत्पत्ति और इसके लुप्त होने के संभावित कारणों की खोज की है। वे कहते हैं कि एक समय पर सरस्वती बहुत बड़ी नदी थी, जो कि पहाड़ों से बहकर नीचे आती थी। अपनी शोध-पुस्तिका 'द लॉस्ट रिवर' में डैनिनो कहते हैं कि उन्हें बरसाती नदी घग्घर नदी का पता चला। कई स्थानों पर यह एक बहुत छोटी-सी धारा है लेकिन जब मानसून का मौसम आता है, तो इसके किनारे 3 से 10 किलोमीटर तक चौड़े हो जाते हैं। इसके बारे में माना जाता है कि यह कभी एक बहुत बड़ी नदी रही होगी। यह भारत-तिब्बत की पहाड़ी सीमा से निकली है। उन्होंने बहुत से स्रोतों से सूचनायें एकत्रित की और सरस्वती के मूल मार्ग का पता लगाया। ऋग्वेद में भौगोलिक क्रम के अनुसार यह नदी यमुना और सतलुज के बीच रही है और यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती रही है। नदी का तल पूर्व हड़प्पाकालीन था और यह 4000 ईसा पूर्व के मध्य में सूखने लगी थी। अन्य बहुत से बड़े पैमाने पर भौगोलिक परिवर्तन हुए और 2000 वर्ष पहले होने वाले इन परिवर्तनों के चलते उत्तर-पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों में से एक नदी गायब हो गई और यह नदी थी सरस्वती।

डैनिनो का कहना है कि करीब 5000 वर्ष पहले सरस्वती के बहाव से यमुना और सतलुज का पानी मिलता था। यह हिमालय ग्लेशियर से बहने वाली नदियां हैं। इसके जिस अनुमानित मार्ग का पता लगाया गया है, उनके अनुसार सरस्वती का पथ पश्चिम गढ़वाल के बंदरपूँछ गिरि पिंड से संभवतः निकला होगा। यमुना भी इसके साथ-साथ बहा करती थी। कुछ दूर तक दोनों नदियां आसपास बहती थी और बाद में मिल गई होंगी। यहां से यह वैदिक सरस्वती के नाम से दक्षिण की ओर आगे बढ़ी और जब यह नदी पंजाब और हरियाणा से निकली तब बरसाती नदियां, नाले और घग्घर इस

नदी में मिल गए होंगे। पटियाला से करीब 25 किमी दूर दक्षिण में सतलुज (जिसे संस्कृत में शुतुर्दू कहा जाता है) एक उपधारा के तौर पर सरस्वती में मिली। घग्घर नदी के तौर पर आगे बढ़ती हुई यह राजस्थान और बहावलपुर में हकरा नदी के रुप में आगे बढ़ी और सिंध प्रांत के नारा से होते हुए कच्छ के रण में विलीन हो गई। इस क्षेत्र में यह सिंधु नदी के समानांतर बहती थी।

इस क्षेत्र में नदी के होने के कुछ और प्रमाण हैं। इसरो (ISRO) के वैज्ञानिकों का कहना है कि थार के रेगिस्तान में पानी का कोई स्रोत नहीं है लेकिन यहां कुछ स्थानों पर ताजे पानी के स्रोत मिले हैं। जैसलमेर जिले में जहां 150 मिमी से भी कम वार्षिक बरसात होती है, वहां 50-60 मीटर की गहराई पर भूजल मौजूद है। इस क्षेत्र में कुएं सालभर नहीं सूखते हैं। इस पानी के नमूनों में ट्रीशियम (हाइड्रोजन का एक रेडियोधर्मी आइसोटोप) की मात्रा नगण्य है जिसका मतलब है कि यहां आधुनिक तरीके से रिचार्ज नहीं किया गया है। स्वतंत्र तौर पर आइसोटोप विश्लेषण से भी इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि रेत के टीलों के नीचे ताजा पानी जमा है। रेडियो कार्बन तिथि निर्धारण भी इस बात का संकेत देते हैं कि यहां पर कुछेक हजार वर्ष पुराना भूजल मौजूद है। आश्चर्य की बात नहीं है कि ताजे पानी के ये भंडार सूखी तल वाली सरस्वती के ऊपर हो सकते हैं।

सरस्वती नदी आदिमानव के पाषाणयुग से भी पूर्व काल में न जाने कब से बहती रही थी। एक अमेरिकन उपग्रह ने भूमि के अंदर दबी इस नदी के चित्र खींचकर पृथ्वी पर भेजे। अहमदाबाद स्थित अन्तरिक्ष उपयोग केंद्र (SAC) ने उन चित्रों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि शिमला के निकट शिवालिक पहाड़ों से कच्छ की खाड़ी तक भूमि के अंदर सूखी किसी नदी का तल है। जिसकी चौड़ाई कहीं-कहीं 6 किलोमीटर तक है।

उनका यह भी कहना है कि किसी समय सतलुज और यमुना नदी इसी नदी में मिलती थी। सेटेलाइट द्वारा भेजे गए चित्रों से पूर्व भी बहुत भूगर्भ खोजकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं। राजस्थान के एक अधिकारी एन.एन गोडबोले ने इस नदी के क्षेत्र में विविध कुओं के जल का रासायनिक परीक्षण करने पर पाया था कि सभी के जल में रसायन एक जैसा ही है। जबकि इस नदी के क्षेत्र के कुओं से कुछ फलांग दूर स्थित कुओं के जलों का रासायनिक विश्लेषण दूसरे प्रकार का निकला। केन्द्रीय जल बोर्ड के वैज्ञानिकों को हरियाणा और पंजाब के साथ साथ राजस्थान के जैसलमेर जिले में सरस्वती नदी की मौजूदगी के ठोस प्रमाण मिले हैं।

अगर सतलुज और यमुना के प्रवाह में आप सरस्वती का भी प्रवाह जोड़ देंगे तो आपको इसका अंदाजा होगा कि इस नदी की क्या ताकत रही होगी। यह आवागमन और व्यापार का सबसे अच्छा रास्ता रहा होगा और इसके उर्वरक डेल्टा (नदी से बने तिकोने उपजाऊ क्षेत्र) और बेसिन (नदी के आसपास की भूमि) के आस-पास रिहायशी बस्तियां भी रही होंगी। लेकिन प्राचीन समय में कुछ बड़े भूकम्पों के कारण उत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति पूरी तरह से बदल गई। ये भूकम्प इतने शक्तिशाली थे कि सरस्वती और इसकी उपधाराओं के पुराने रास्ते ही बदल गए। इसका परिणाम यह हुआ कि सतलुज ने रास्ता बदला और यह पश्चिम में सिंधु नदी से जा मिली और यमुना नदी पूर्व की ओर गंगा के पास आ गई।

6. उपसंहार

धर्म और संस्कृत ग्रंथों के अनुसार सरस्वती का अस्तित्व था। ऋग्वेद में सरस्वती नदी का उल्लेख मिलता है और इसकी महत्ता को दर्शाया गया है। संस्कृत की कई पुस्तकों में भी इसका उल्लेख है। सरस्वती को भी सिन्धु नदी के समान दर्जा प्राप्त है। वेदों की ऋचाओं में कहा गया है कि यह एक ऐसी नदी है जिसने एक सभ्यता को जन्म दिया। इसे भाषा, ज्ञान, कलाओं और विज्ञान की देवी भी माना जाता है। ऋग्वेद की ऋचाओं को इस नदी के किनारे बैठकर ही लिखा गया था, लेकिन इस नदी के अस्तित्व को लेकर बहुत वाद-विवाद हुआ है। सरस्वती नदी का नाम तो सभी ने सुना लेकिन उसे किसी ने देखा नहीं। माना जाता है कि प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन होता है इसीलिए उसे त्रिवेणी संगम कहते हैं।

आधुनिक आइसोटोपिक तकनीकों, सुदूर संवेदन प्रणाली, सैटेलाइट मानचित्र, भूगर्भी-वैज्ञानिक शोधों आदि से एक बात तय हो जाती है कि किसी समय वर्तमान हरियाणा से लेकर राजस्थान तक एक विशाल नदी प्रवाहित होती थी और जो कालांतर में भूगर्भी कारणों से लुप्त हो गई वो थी नदी सरस्वती। अब हरियाणा सरकार ने सरस्वती के पुनरुद्धार के लिए हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड का गठन किया है जिसका मुख्य उद्देश्य है सरस्वती नदी का पुनरुद्धार एवं सरस्वती नदी से जुड़े क्षेत्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन एवं अतीत के रूप में विकसित करना। सरस्वती पुनरुद्धार परियोजना का कार्य कोई साधारण कार्य नहीं, यह भारत की अस्मिता एवं महान गौरव को दर्शाता है क्योंकि इसी नदी के तट पर विश्व का सर्व प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद एवं अन्य वैदिक ग्रंथ रचे गए जो भारत की विश्वगुरु की पराकाष्ठा एवं सांस्कृतिक मूल्यों एवं धरोहरों की तब से लेकर आज तक की निरंतरता का बोध करवाते हैं। सरस्वती के पुनरुद्धार एवं वैज्ञानिक तथ्यों व साक्ष्यों के फलस्वरूप हम आने वाली युवा पीढ़ी को भारत का सही इतिहास बता पाएंगे।

इस क्षेत्र में नदी के होने के कुछ और प्रमाण हैं। इसरो (ISRO) के वैज्ञानिकों का कहना है कि थार के रेगिस्तान में पानी का कोई स्रोत नहीं है लेकिन यहां कुछ स्थानों पर ताजे पानी के स्रोत मिले हैं। जैसलमेर जिले में जहां 150 मिमी से भी कम वार्षिक बरसात होती है, वहां 50–60 मीटर की गहराई पर भूजल मौजूद है। इस क्षेत्र में कुएं सालभर नहीं सूखते हैं। इस पानी के नमूनों में ट्रीशियम (हाइड्रोजन का एक रेडियोधर्मी आइसोटोप) की मात्रा नगण्य है जिसका मतलब है कि यहां आधुनिक तरीके से रिचार्ज नहीं किया गया है। स्वतंत्र तौर पर आइसोटोप विश्लेषण से भी इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि रेत के टीलों के नीचे ताजा पानी जमा है। रेडियो कार्बन तिथि निर्धारण भी इस बात का संकेत देते हैं कि यहां पर कुछेक हजार वर्ष पुराना भूजल मौजूद है। आश्चर्य की बात नहीं है कि ताजे पानी के ये भंडार सूखी तल वाली सरस्वती के ऊपर हो सकते हैं।

संपर्क करें:
डॉ. मनीष कुमार नेमा
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की।